श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

सनन्ध

नोट १. यह सनन्ध किताब दिल्ली से अनूपशहर जाते समय रास्ते में उतरी। इसमें असराफील (जागृत बुद्धि से) कुरान के तीसों सिपारों के शब्द मुक्तआत (छिपे भेद) जो लोगों को जाहिर नहीं हो सके, क्योंकि रसूल साहब ने साफ कह दिया था कि इनके मायने आखिर में खुद खुदा आकर अपनी उम्मत (नाजी फिरका) के वास्ते खोलेंगे।

नोट २. रसूल साहब को अल्लाह तआला ने जबराइल फरिश्ते को भेजकर अर्श में बुलाया और बातें कीं। उसको दर्शन की रात कहा है। शबे मेयराज का अर्थ दर्शन की रात्रि है।

ढूंढे सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।

उस मेयराज (दर्शन) की रात्रि को सब ढूंढ़ते हैं। वह रात नब्बे हजार बातों का व्योरा है। उसमें तीस हजार शरीयत की बातें तो कुरान में स्पष्ट कही गयी हैं और तीस की हिदायत की गई कि यदि कोई इनके योग्य हो तो कहना। बाकी के तीस हजार जो मारफत के अर्श अजीम की खास बातों की हैं, रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं दिया। उसे खुदा अपनी उम्मत के लिए आकर खोलेंगे। यही मेरे और मेरी उम्मत के आने की पहचान होगी। उसी मेयराज की रात्रि को शबे मेयराज कहा है, जिसे आज दिन तक सारी दुनियां के लोग खोज रहे हैं, पर किसी को स्पष्ट उस रात्रि और उस ज्ञान का पता नहीं चला। उस शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) के भेद को अपने कहे अनुसार खुद खुदा अल्लाह तआला आखरुल जमा इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी ब्रह्मसृष्टि के लिए जाहिर किया है, जिससे सबको उस खुदा के दर्शन होंगे।

सनन्ध पेहेली अल्ला रसूल की

अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल।। १ ।।

अल्लाह के प्यारों में प्यारे माशूक श्यामा महारानी हैं। यह श्री राजजी महाराज के खास दिल हैं, इसलिए जब यहां श्यामा महारानीजी के साथ बसरी शक्ति हकी सूरत श्री इन्द्रावतीजी के दिल में आए तो उस दिन से पूर्ण ब्रह्म कहलाए और खुद अल्लाह आशिक कहलाए।

आसिक कह्या अल्लाह को, मासूक कह्या महंमद।
न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द।। २ ।।

आशिक अल्लाह को कहा है और माशूक श्यामा महारानी को कहा है। इमाम मेंहदी के बिना इसकी कोई व्याख्या नहीं कह सका।

Nijanand App

आए रसूलें यों कह्या, काजी आवेगा खुद सोए।
पर फुरमान यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए।। ३ ।।

मुहम्मद साहिब ने आकर कहा था कि आखिर में अल्लाह स्वयं काजी (न्यायाधीश) बनकर आएंगे पर कुरान में लिखा है कि मुहम्मद साहेब और अल्लाह (श्री राजजी महाराज) को दो नहीं समझना।

एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर।
भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ इन पर।। ४ ।।

इनको एक भी नहीं कहा जा सकता और दो भी क्यों कहें (कैसे कहें)? परमधाम में साथ थे। खेल में आकर ब्रज और रास में जुदा लीला करने से जुदे कहलाए और अब फिर श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहदी के तन में आ जाने से इकट्ठे हो गए। उनके पास ही सारे कुरान के मायनों को खोलने का अधिकार है।

ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझोंमें भी गुझ।
ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ।। ५ ।।

ऐसे कई रहस्य भरे (गुह्य बातें) भेद हैं उन रहस्यों के अन्दर भी गूढ़ रहस्य छिपे हैं। उनका भेद स्वयं इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और किसी को पता ही नहीं चल सकता।

फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला–कलाम।
सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम।। ६ ।।

रसूल साहब अल्लाह तआला का फरमान (कुरान) लेकर आए हैं जो अल्लाह के ही वचन हैं। यह उन्होंने अपने मोमिनों के लिए भेजा है। इसके अन्दर छिपे भेद हैं।

ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर।
ए गुझ खसम मोमिन की, बिना रसूल न कोई कादर।। ७ ।।

यह जिसने भेजा है वह जानते हैं या जिनके लिए भेजा है वह जानते हैं। यह मोमिनों की और अल्लाह की छिपी बातें है। बिना आखिरी रसूल इमाम मेंहदी साहब के और कोई उसको खोलने की सामर्थ्य नहीं रखता।

खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए।
तोलों असलू मोमिन को, चैन जो कैसे होए।। ८ ।।

खसम (धनी) के लिखे हुए वचनों के भेद को जब तक उनके मोमिन (सखियां) जान नहीं जाते, तब तक असली मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) को चैन (आराम) कैसे मिलेगा?

माएने इन कुरान के, जोलों ना समझाए।
तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों केहेलाए।। ९ ।।

जब तक उस कुरान के गुझ भेदों को समझ नहीं लेती तब तक कोई भी रूह अपने को ब्रह्मसृष्टि कहलाने की हकदार नहीं है।

तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम।
करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम।। १० ।।

इसलिए पहले से ही आकर मुहम्मद साहब ने अल्लाह कलाम (कुरान) में लिख दिया है कि ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) और इमाम मेंहदी आखिर में आकर इसे खोलेंगे।

Nijanand App

हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल।
नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल।। ११ ।।

अब श्री प्राणनाथजी कह रहे हैं कि मैं जागृत बुद्धि (असराफील) को लेकर आया हूं और कुरान के सारे भेदों को खोलकर तुम्हारे दिल के संशय मिटाता हूं।

अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम।
पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम।। १२ ।।

अब वही आखिरत का समय आ गया है। इसलिए, हे मुसलमानो! (मोमिनो-सुन्दरसाथजी) उठकर जागृत हो जाओ। नूर अकल (असराफील-जागृत बुद्धि) से तुम्हें निर्मल कर अपने धनी की पहचान कराता हूं।

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।
अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख।। १३ ।।

सबको अपनी-अपनी पारिवारिक भाषा प्यारी है। संसार में तो लाखों भाषाएं हैं तो मैं किस बोली (भाषा) में वर्णन करूं?

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।। १४ ।।

यहां तो सबकी बोली जुदा है और सबकी रस्मो रिवाज अलग हैं और सभी अलग-अलग नाम के पीछे लड़ रहे हैं, परन्तु मुझे तो सभी के लिए कहना है।

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान।। १५ ।।

इस संसार में तो बिना हिसाब बोलियां (भाषाएं) हैं, इसलिए सब के लिए सब से सरल जानकर मैं हिन्दुस्तानी भाषा में कहूंगी।

बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।। १६ ।।

यही भाषा सबसे अच्छी है जिसे सब समझते हैं, इसीलिए मैं इसी भाषा में कहूंगी, क्योंकि मुझे तो सभी के संशय मिटाकर निर्मल करना है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १६ ।।

सनन्ध आरबीकी

कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम।
बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके साखियां कहत हों।
लाकिन माय आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम।। १ ।।
लेकिन नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुस्लमान।।

स्वामीजी कहते हैं कि मेरे रसूल ने जो अरबी भाषा में वचन कहे, वह सत्य हैं। उनकी गवाहियां देकर मैं कहती हूं, पर हिन्दुस्तान के मुसलमान नहीं समझेंगे क्योंकि कुरान अरबी भाषा है।

Nijanand App